8553,a mit folgenden Varianten: a. मुविदीर्ण st. मुमस्तितं e. म्रापयापिद् काले च. Die Scholien erklären: मुविक्रासमिप शत्रुं मुविदीर्ण विनष्टं कुर्वीत । मुयुद्धमिप शत्रुं मुपला-पितं कुर्वीत । An der anderen Stelle keine Erklärung.

3283. = R. 3,37,2 ed. Bomb. d. भाक्ता st. ग्राता.

3293. = Kan. 60 bei Weber.

3308. = Рамкав. 1,14,76. в. नाम्ति ह्रती तड्रतमा. с. तेनैव प्वतीमा च.

3311. Вилктя. 2,99 lith. Ausg. III. a. वैडूर्यम्ट्यां (in Kern's Ausg. der Varån. Вқи. S. wird stets वैडूर्य geschrieben). b. निखनति st. विलिखति. c. भृतिम् st. वृतिम्. d. प्रायमां st. प्राप्यमां.

3313. Внатт. 3,84 lith. Ausg. III. а. गङ्गा st. गङ्गि:.

 $3314. = ext{Kavirāmṛtak.} 86. a. ेट्हेंदेन st. ेट्हेंदे ४पि. <math>b.$ न गुणा पाति वि $^{\circ}.$ a. म्रनुबद्राति.

3316. Çатакâv. 13. а. Richtig काम: कामं. а. ससंधममी तिता.

3317. Внактя. 3,81 lith. Ausg. III. d. कदा यास्यामार्गतवहत्त °.

3318. Внактя. 1, 6 lith. Ausg. III. a. वक्रा.

3321. = Kim. Nitis. 4,31. d. मिलसंपत्प्रकीर्तिता.

3322. Сатака́v. 67. а. निदाघे संपूर्ण सुखम्.

3335. Bhartr. 2,18 lith. Ausg. III. a. म्रस्यि गी:.

3340. Çатака́v. 91. b. हादनमत्तमायाः.

3346. = Рвазайсавн. 9,а. а. Gleichfalls शं पुषाति. а. येथा ते प्रतिमानमुङ्कति.

3347. = Vворна-Ка́р. 11, з. а. स्यूलतनुः, रूस्तिमात्रांकुशा. ь. प्रनश्यति. с. वज्रमात्रं नगास्

3348. = Kan. 33 bei Weber. Galan. Varr. 199. Vgl. Spruch 5048.

3355. = Kāṇ. 93 bei Weber (c. d. म्रजा सिंक्प्रसादेन वने चर्ति निर्मया). Каунамя-так. 101 (c. त्रीपिटनी).

3358. = Кауітамітак. 7.

3359. Bhartr. 1,48 lith. Ausg. III. c. पीनार्स्यल.

3372. Der Schluss = dem Schlusse von Spruch 4807.

3376. Auch MBu. 12,11006. a. क्रुध्यता वै st. क्राधनेभ्याः c. d. म्रमानुषान्मानुषा वै विशिष्टस्तयाज्ञानान्ज्ञानविद्वै विशिष्टः

3383. Vgl. Spruch म्ह्री। प्रास्तं प्रधयेत im zweiten Nachtrage.

3387. Citirt in Sarvadarçanasamgraha S. 3 und 6. c. बुद्धि st. प्रज्ञा. d. जीविका धातृनिर्मिता an der zweiten Stelle.

3401. Внактя. 3,98 lith. Ausg. III. b. Gleichfalls FF. Lies am Schlusse: jetzt lassen